Gaatha, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : PP-10-14

गाथा (GAATHA)

स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)

Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025

Page No.- 10-14

©2025 Gaatha

https://gaatha.net.in

Author :

श्रीमती कंचन कुमारी

सहायक प्राध्यापक- हिन्दी विभाग,
श्री राधा कृष्ण गोयनका
महाविद्यालय,सीतामढ़ी,बिहार.

Corresponding Author :

श्रीमती कंचन कुमारी

सहायक प्राध्यापक- हिन्दी विभाग,
श्री राधा कृष्ण गोयनका
महाविद्यालय,सीतामढ़ी,बिहार.

त्यागपत्र :- नारी मन की विवशता

पराधीनता और विवशता दोनों ही मनुष्य से उसके जीवन की खुशी छीन लेते हैं। पराधीनता जहाँ शरीर की स्वतंत्रता छीनती है वही विवशता मन की आजादी को। एक नारी के पास कहने के लिए बहुत कुछ होता है, परिवारिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं मांनसिक ऐसी कितनी ही बातें हो सकती हैं, जो एक नारी की कहानी कह सकती है, परन्तु पराधीनता या विवशता वश ना तो वह कुछ कह पाती है और न कुछ कर पाती है। हमारे समाज में विवशता तो जैसे नारी का भाग्य ही बन चुका है।

त्यागपत्र एक बहुत कम पृष्ठों का उपन्यास है, परन्तु एक छोटा उपन्यास भी किसी नारी के कई मनोदशाओं को दर्शाने में कामयाब हो सकता है। इस उपन्यास में मृणाल के जीवन के उतार-चढ़ाव इस ओर ले जाते हैं कि वह हर एक परिस्थिति में विवश हो जाती है। वह बिना माँ-बाप के अपने बड़े भाई के साथ रहती है और उसका एक भतीजा भी है प्रमोद ! माँ की जगह भाभी है लेकिन क्या भाभी माँ हो सकती है? यह एक विचारणीय और मर्मस्पर्शी प्रश्न है। विवशता उसके जीवन के हर मनोदशा में देखी जा सकती है।

उपन्यास के शुरुआत में जब प्रमोद पतंग उड़ाने की बात करता है तो चंचल मन से वह राजी हो जाती है, पर पतंग खरीदने के पैसे मांगने पर वह कहती है:- **"चल रे, पतंग से बालक गिर जाते हैं।"**[1] यह एक वाक्य कई बातें कह जाता है। क्यों वह पतंग के पैसे नहीं दे सकती? क्या उसे अपने भाई से लेने का हक़ नहीं है। लेकिन शायद उसे अपने भाई से पिता तुल्य लाड़-प्यार नहीं मिल पा रहा है इसलिए वह नहीं माँग पाती है। इस जीवन वह एक दबाव को महसूस करती है जैसे उसे किसी कार्य को करने की अपनी इच्छा ना हो। वह अपना स्कूली जीवन बिताते हुए किशोरावस्था में प्रवेश करती है और उसका मन चंचल हो उठता है मन में कई इच्छाएँ जगती हैं, जो स्वाभाविक है, परन्तु इच्छाएँ मन के

अंदर ही रह जाती है। अपनी चंचलता में प्रमोद से कहती है:- **"मैं नहीं बुआ होना चाहती। बुआ ! दी ! देख चिड़ियाँ कितनी ऊँची उड़ जाती है। मैं चिड़िया होना चाहती हूँ ।"**[2] इस वाक्य से ऐसा प्रतीत होता है कि उसे आजादी मिली ही न हो । इन शब्दों में उसकी विवशता स्पष्ट दिखाई देती है। अभी वह अपने सपनों की उड़ान भर ही रही थी कि असमय उसकी शादी करा दी जाती है और वह भी ऐसे व्यक्ति से, जिसकी यह दूसरी शादी है। उम्र का अंतर क्या होगा यह अनुमान लगाया जा सकता है। मृणाल की उम्र क्या है इसका इस बात पर कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उसका विवाह उसकी मर्जी के बिना ही कर दिया जाता है। उसकी मनोदशा इस समय क्या है इस वाक्य से स्वतः समझा जा सकता है- **"प्रमोद, तेरी बुआ तो मर गयी । तू उसे अब कभी याद मत करियो।"**[3]

इतनी विवशता किसी स्त्री के जीवन में क्यों आ जाती है कि विवाह जैसी खुशी भी उसके लिए दुःख का कारण और मजबूरी बन जाती है? मृणाल का अपराध इतना भी तो बड़ा नहीं था। किशोरावस्था में लड़कियों की मनोस्थिति ऐसी हो जाती है कि उन्हें सहीं-गलत का भान नहीं होता और वे गलत राह पर चल पड़ती है। विचारणीय बात यहाँ यह है कि क्या यदि मृणाल के माता-पिता जीवित होते तो उसे इस गलती की ऐसी सजा देते। बच्चों का सही मार्गदर्शन करना माता-पिता एवं अभिभावक की जिम्मेवारी होती है। जब बच्चे बिन माँ-बाप के हो तो अभिभावक का दायित्व और बढ़ जाता है। परन्तु लड़की के लिए इस समाज में माता-पिता के सिवा कोई दूसरा आसरा ही नहीं होता जहाँ ये स्वतंत्र होकर अपनी इच्छा बता सके और खुलकर जी सके। यही हमारे समाज की सच्चाई है। शादी के बाद मृणाल जब अपने पति के साथ उसके घर चली जाती है, तब सिर्फ वहाँ पतिव्रता होने का धर्म निभाती है। उसे महसूस होता है कि अब वह परायी हो चुकी है। पराया उसी घर के लिए जो घर कभी उसका अपना हुआ करता था या बस उसे वह अपना माना करती थी। **"प्रमोद, सच्ची-सच्ची कहूँ तो मैं ही परायी हो गयी हूँ। तुम सब लोगों के लिए मैं परायी हूँ। तेरी माँ ने मुझे धक्का देकर पराया बना दिया है, पर मुझे जहाँ भेज दिया है, प्रमोद मेरा मन वहीं का नहीं है।"**[4] कुछ दिन वह पति के घर रहती है फिर दूसरी बार जब वह अपने मन से अपने भाई के घर आती है, तब वह गर्भवती रहती है, लेकिन यह खुशी भी उसके लिए मजबूरी और विवशता ही होती है। इसका पता इस बात से लगता है कि वह बिना किसी को बताए किसी ऐसी चीज़ का सेवन कर लेती है, जिससे उसके गर्भ को खतरा होने की सम्भावना बन जाती है आश्चर्य यह है कि वह यह सबकुछ जान बूझ कर करती है। इस खतरे से तो वह बच जाती है, लेकिन वह पुन: अपने पति के घर नहीं जाना चाहती है।

माँ बनना तो एक स्त्री के जीवन का सबसे सुखद अहसास होता है। स्वयं के हाथों मातृत्व का हनन उस स्त्री के जीवन की लाचारी एवं विवशता को दर्शाता है जो अकथनीय है। यहाँ मृणाल का माँ बनना भी उसके जीवन की विवशता है। इस स्थिति में हर स्त्री अपने पति का साथ चाहती है। परन्तु मृणाल अपने पति के पास नहीं जाना चाहती है। वह कुछ भी खुलकर नहीं कहती और कहती भी तो किससे? यहाँ था ही कौन जो उसके दर्द को समझ सकता हो। अभिभावक रूप में भाई जो कि पिता तुल्य थे। भामी जो माता होकर भी उसकी माँ न बन सकी और एक उसका प्रिय भतीजा प्रमोद ! जो अभी इतना बड़ा नहीं हुआ कि उसके दर्द को समझ सके या उसको सही राह दिखा सके। वह स्वयं में ही घुटती रहती थी फिर भी प्रमोद के सिवा उसका कोई और नहीं था जिससे वह दिल की बात कह सके। प्रमोद के बार-बार पूछने पर वह कहती है:- **"सच-सच कहती हूँ, प्रमोद । किसी और से नहीं कहा, तुझे कहती हूँ। बेंत खाना मुझे अच्छा नहीं लगता है। न यहाँ अच्छा लगता है, न वहाँ अच्छा लगता है।"**[5]

इस बात को सुनकर प्रमोद को आश्चर्य भरा दुःख होता है, लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता । कुछ दिन बीत जाने के बाद मृणाल के भाई ने उससे उसका हाल जानने की कोशिश की। वे जानना चाहते थे कि मृणाल का इस तरह पति के घर से आने का क्या कारण है और वह कब तक यहाँ रहेगी? इस पर यह बिना कुछ बताये ही जबाव देती है। **"कुछ भी बात नहीं है बाबूजी, पर मैं जाना नहीं चाहती हूँ।"**[6] उसके इस जबाब का यहाँ कोई मतलब नहीं था। वह चाहे या ना चाहे उसे तो वहाँ जाना ही पड़ेगा। इसके सिवा कोई आसरा भी नहीं। उसके भाई-भामी को उसका इस तरह

पति के घर से आना पसन्द नहीं है। मृणाल इस परिस्थिति को समझकर सदा के लिए भाई के घर से विदा हो जाती है और कभी लौटकर नहीं आती है वह जाते-जाते आखिरी बार प्रमोद से कहती है- **"तो सुन मैं कहती हूँ तू नहीं आएगा। मैं तुझे बुलाऊँगी ही नहीं। कहती हूँ, तुम सब लोग मुझे भुल जाना। मैं जैसी गयी, वैसी मेरी। इसके बाद मैं तुम लोगों को बिलकुल तकलीफ नहीं दूंगी।"**[7] और बिना उसकी इच्छा और खुशी के उसके जाने की तैयारी शुरु होती है। इस बार वह सभी प्रिय वस्तुओं को यहीं छोड देती है और अपनी पुस्तकें भी साथ नहीं ले जाती है। इस विदाई के बाद मृणाल को अपने भाई के घर से कोई लगाव नहीं रह जाता वह अंत तक कभी यहाँ नहीं आती है।

विवाहित महिलाओं के लिए उसके घर से बढ़कर कोई अन्य श्रेष्ठ स्थान नहीं होता है। जब कोई स्त्री इस घर का आजीवन त्याग कर दे तो उसकी हृदय वेदना और विवशता कितनी होगी यह सिर्फ एक स्त्री ही समझ सकती है। मृणाल के जीवन की कहानी उन सभी महिलाओं की कहानी है जिसके ऊपर अपने माता-पिता का साया नहीं होता। वह अपनी सी लाखों स्त्रियों की प्रतिनिधि है। उसने भाई का घर त्याग दिया तो यहाँ इस बात को समझने और पूछने वाला कौन है? बहुत दिनों तक बुआ के नहीं आने से प्रमोद थोड़ा चिंतित रहता था, पर वह क्या कर सकता है। उसकी अवस्था ऐसी नहीं कि वह मृणाल से सबकुछ जान सके। अपनी माँ से पूछने पर उसे पता चलता है कि मृणाल ने कारण एक मृत कन्या को जन्म दिया था और इस उसकी स्थिति भी मृतप्राय हो गई थी। इस घटना के कुछ ही समय बाद हम मृणाल को पति परित्यकता के रूप में पाते हैं, यद्यपि परित्याग का कारण कोई स्पष्ट नहीं है। मृणाल का पति यह समझता है कि विवाह के पूर्व उसका सम्बन्ध किसी अन्य व्यक्ति से रहा है। इसकी सूचना उसे मृणाल से ही मिलती है। शादी के बाद मृणाल को जब शीला के भाई का पत्र मिलता है तो पतिव्रता धर्म निभाते हुए उसकी चर्चा वह अपने पति से कर देती है। हालाँकि उसने उसके पत्र का जबाब इन्कार के रुप में उसे दे दिया था। फिर भी इस विषय को आधार बनाकर उसका त्याग कर देता और उसके भाई के घर लौट जाने को कहता है, परन्तु मृणाल वहीं न जाकर पति के घर से अलग वह अकेले रहना स्वीकार करती है। बहुत दिनों के बाद प्रमोद उसे खोजते हुए उसके पास पहुँच जाता है स्थिति को समझकर वह उससे अपने घर ना आने का कारण पूछता है तो वह कहती है:- **"प्रमोद, मैं तुझे कैसे बताऊँ। मैं घर नहीं आ सकती थी। एक बार घर आकर मैं समझ गयी थी कि वैसे मैंके जाना ठीक नहीं है। स्त्री जब तक ससुराल की है, तभी तक मइके की है। ससुराल से टूटी, तब मैके से तो आप ही में टूट गई थी।"**[8] पति द्वारा निर्वासित होने पर जिस व्यक्ति ने मृणाल का भरण-पोषण किया उसकी स्वार्थपरता को अच्छी तरह जानती हुई भी वह उसकी कृतज्ञ है और उसे छोड़ना नहीं चाहती। **"मेरा अस्तित्व मेरे लिए नहीं है। इस समय तो बेशक मैं उस पुरुष की सेवा के लिए हूँ।"**[9] मृणाल पुन: एक पुरुष का आश्रय लेने को विवश है। यहाँ स्त्रियों का जीवन द्वन्द भरा दिखाई पड़ता है। समाज ना तो उसका साथ देता है और ना उसे पूरी तरह अकेला ही जीने देता है। इस समाज में एक स्त्री का अकेले रहना भी किसी अपराध से कम नहीं होता। उसे सिर्फ जिंदा रहने के लिए भी कीमत चुकानी पड़ती है। इतना सबकुछ होने के बाद मृणाल के मन में मरने का विचार नहीं आया होगा यह अविश्वसनिय है इस विचार की पुष्टि तब होती है जब वह वार्तालाप के दौरान कहती है:- **"मैंने यह सोचा था और चाहा था कि मैं मर ही जाऊँगी। ऐसे जीने में क्या है लेकिन एकाएक मुझको पता लग आया कि जिसने जीवन दिया है, मौत भी उसी की दी हुई मैं ले सकती हूँ। अन्यथा अपने अहंकार के के वश मरनेवाली मैं कौन होती हूँ?"**[10] दुविधा ऐसी की जीना तो कष्टकारी है ही मरना भी आसान नहीं होता है। वह भली-भाँति जानती है कि इस पुरुष को बस उसके रूप का लालच है और वह यह भी समझ चुकी है कि जब उसका मुझसे मन भर जायगा तब वह भी छोड़कर चला जायगा। फिर भी उसके साथ रहने की उसकी क्या विवशता हो सकती है? स्त्री को पति के साथ रहने की विवशता तो सामाजिक हो सकती है, लेकिन किसी और पुरुष के साथ रहने की भी विवशता होती है। यह मृणाल के जीवन से स्पष्ट होता है। हो सकता है कि मृणाल को समाज के अन्य पुरुषों का डर हो और कई पुरुषों के बुरी नजर से बचने का उसने यह रास्ता चुनाहो। वजह चाहे जो भी हो मृणाल उस पुरुष की सेवा भी विवशतावश ही करती है, वरना कोई स्त्री ऐसे पुरुष के साथ संघर्ष

नहीं रहना चाहती है।

प्रमोद जब उसे अपने साथ चलने को कहता है लेकिन कहाँ? इसका उत्तर उसके पास नहीं। मृणाल उसके साथ जाने से इन्कार करती है और उसे भी वहाँ आने से मना करती है **"नहीं आना चाहिए। मैं तो तुमको अपनी ओर से भी यही समझाने वाली थी। जो समाज में हैं, समाज की प्रतिष्ठा कायम रखने का जिम्मा भी उन पर है। उनका कर्तव्य है कि जो उसके उच्छिष्ट हैं, या उच्छिष्ट बनना पसन्द करते हैं, उन्हीं को जीवन के साथ नये प्रयोग करने की छूट, हो सकती है।"**[11] प्रमोद जब मृणाल को अपने साथ ले जाने में असमर्थ पाता है तो वह उसकी सहायता करने को निवेदन करता है, पर मृणाल को जीवन की स्थिति पर दया कर कोई उसकी सहायता करे यह उसे स्वीकार नहीं है। अपने ही भतीजे से सहायता लेना उसके लिए आसान-सा प्रतीत नहीं होता। वह डरती है कि कही उसके रिश्ते समाज के सामने उजागर ना हो जाए। यह स्थिती भी उसके मन की विवशता को दर्शाता है। वह चाहकर भी उससे सहायता नहीं लेती है। **"प्रमोद, सहायता की मैं भूखी नहीं हूँ क्या? तुझसे ही वह सहायता न लूंगी! लेकिन सहायता का हाथ देकर क्या मुझे यहाँ से उठाकर ऊँचे वर्ग में जा बिठाने की इच्छा है? तो भाई, मुझे माफ कर दो। वैसी मेरी अभिलाषा नहीं है।"**[12] इस प्रकार मृणाल प्रमोद से बिना कुछ लिए उसे विदा कर देती है। बहुत दिनों तक प्रमोद अपनी पढ़ाई में मग्न रहता है। एक बार फिर उसे अपने बुआ की याद आती है तो वह मृणाल को खोजने निकल पड़ता है, परन्तु उसे निराशा मिलती है। प्रमोद की शादी तय हो जाती है और एक दिन जब वह अपने ससुराल में जाता है तो अचानक वहाँ उसे मृणाल मिलती है, मगर मृणाल उसे देखकर भी अनदेखा करती है जैसे वह उसे जानती ही नहीं है।

बहुत दिनों बाद किसी को अपना रिश्तेदार मिले और वह उसे देख भी ना पाये यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी मनोदशा होती है। मृणाल के मन की विवशता यहाँ भी यथावत दिखाई पड़ती है, प्रमोद जब मृणाल के पास जाकर उससे उसको ना पहचानने का कारण पूछता है तब वह कहती है:- **"मैं अपशगुन जो हूँ, भाई! अपशगुन से बनता काम बिगड़ जाता है। अब भी मैं सोच रही हूँ कि क्यों चली न जाऊँ? पर सुन, एक बात तुझसे कहती हूँ। यहाँ कोई बेवकूफी मत करना।"**[13] मृणाल मना करने के बाद भी प्रमोद अपने ससुराल में सबकुछ बता देता है और इसका परिणाम यह होता है कि उसकी शादी टूट जाती है और मृणाल भी वहाँ से अपना काम छोड़कर कहीं और चली जाती है। एक बार फिर मृणाल बेघर होकर भटकने को मजबुर हो जाती है। यह भटकाव उसे बद से बदतर स्थिति में रहने को विवश कर देती है। मृणाल प्रमोद से भागती फिरती है, ताकि उसके जीवन की काली परछाई भी उसके जीवन पर ना पड़ सके। उसके जीवन का अपराध क्या है? अभी तक कुछ समझ नहीं आता। आखिर उसने ऐसी क्या गलती की जो इस समाज को स्वीकार्य नहीं है? शायद आवश्यकता से अधिक उसने अपने जीवन को पारदर्शी बना दिया है। इस समाज को उसने अपनी निश्छल नजरों से देखा। उसे क्या पता की इस समाज में स्त्री के सच को बर्दाश्त करने की क्षमता ही नहीं है। स्वयं को निर्दोष साबीत करने का उसके पास कोई सबूत नहीं है। इस कारण आजीवन वह परवशता का जीवन व्यतीत करती है। और अंतत: वह एक ऐसी जगह पहुँच जाती है, जहाँ कोई सभ्य सामाज का व्यक्ति पाँव भी रखना पसंद नहीं करता है।

कई वर्षों के बाद मृणाल स्वयं प्रमोद को पत्र लिखकर अपनी जीवन दशा का वर्णन करती है। पत्र को पढ़कर प्रमोद मृणाल से मिलने उसके पास जाता है और उसे वहाँ से अपने घर ले जाने की जिद करता है। परन्तु अब मृणाल की अवस्था ऐसी है कि वह प्रमोद पर बोझ नहीं बनना चाहती। जब प्रमोद उसकी सहायता करने की बात करता है तब वह उससे बहुत सा रूपया देने की बात कहती है। रुपयों का वह क्या करेगी? पूछने पर मृणाल कहती है- **"क्या करूँगी, वह तो अभी नहीं जानती हूँ। पर पहले तो तेरे चित्त का भरम मिट जाएगा कि मैं तेरी सहायता नहीं चाहती हूँ। फिर रुपया छोड़ने में तेरा अपना भी भला है। खूब कमा और कमाकर सब इस गड्ढे में ला पटका कर। सुना कि नहीं? रुपये के जोर से यह नर्ककुण्ड स्वर्ग बन सकता है। ऐसा तो मैं नहीं जानती। फिर भी रुपया कुछ न-कुछ काम आ सकता है।"**[14] मगर मृणाल की बात प्रमोद को समझ नहीं आती और वह कुछ रुपये एवं दवाइयां उसे

देकर वहाँ से चला आता है और अपने गृहस्थ जीवन के आनंद में इतना खो जाता है कि उसे मृणाल की याद भी नहीं आती है। सत्रह साल बाद उसे मृणाल की मृत्यु की सूचना मिलती है और वह अंदर से तड़प उठता है, वह स्वयं को मृणाल की जीवन की अवस्थाओं एवं विपरीत दशा का जिम्मेवार मानता है। उसकी यह वह व्याकुलता उसे चैन से रहने नहीं देती अपनी इस गलती की सजा वह स्वयं से स्वयं को देता है। **"बुआ तुम गयीं। तुम्हारे जीते जी मैं राह पर न आया। अब सुनों मैं यह जजी छोड़ता हूँ। जगत का आरम्भ-समारम्भ ही छोड़ दूंगा । औरों के लिए रहना तो शायद नये सिरे से मुझसे सीखा न जाए, आदतें पक गयी हैं: पर अपने लिए तो उतना ही स्वल्पता वह से रहूँगा, जितना अनिवार्य होगा।"**[15] और वह अपने पद से त्यागपत्र दे देता है।

<u>निषकर्ष:-</u> इस उपन्यास में लेखक ने गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया है। नारी जीवन की व्यथा इतनी अधिक है कि इतने कम पृष्ठों के उपन्यास में उसे पूर्ण रूप से वर्णित नहीं किया जा सकता है। लेखक के उद्देश्य तक पहुँचने का मेरा कोई अभिप्राय नहीं है। मैनें इस उपन्यास के माध्यम से एक नारी के प्रति इस समाज के नजरिये को स्पष्ट का करने का प्रयत्न किया है। किसी प्रकार किसी स्त्री का जीवन विभिन्न परिस्थितियों को झेलते हुए गुजरता है और हर स्थिती में जीवित रहना भी उसके लिए कितना मुश्किल होता है। इस उपन्यास में मृणाल शुरु से अंत तक इस अपनी इच्छाओं, भावनाओं, जिज्ञासाओं और खुशियों को दबाते हुए नजर आती है। जीवन के हर मोड़ पर उसकी परवशता और हृदय की विवशता स्पष्ट नजर आती है। हर रिश्ते को सामाजिक दबाव में निभाती हुई, वह अपना जीवन व्यतीत करती है और अंत में उसके जीवन की परवशता उसके मन की विवशता बन जाती है।

<u>संदर्भ सूची:-</u>

1. त्यागपत्र, जैनेन्द्र कुमार पृष्ठ सं0 - 11
2. त्यागपत्र, जैनेन्द्र कुमार पृष्ठ सं0-12
3. वही पृ0 सं0 -15
4. वही पृ0 सं0 -17
5. वही पृ0 सं0 -26
6. वही पृ0 सं0 -29
7. वही पृ0 सं0 -30
8. वही पृ0 सं0 -57
9. वही पृ0 सं0 -58
10 वही पृ0 सं0 -58
11 वही पृ0 सं0 -65
12 वही पृ0 सं0 -65
13 वही पृ0 सं0 -74
14 वही पृ0 सं0 -85
15 वही पृ0 सं0 -90

•